A&A Book Trust

कजरी गाय ने की सफाई

कहानीः यूया ० टौमस विस्लैंडर चित्रः स्वेन नॉर्दक्विस्ट

अनुवादः अरुंधती देवस्थले और लुईस कासेनबर्ग

कहानीः यूया ० टौमस विस्लैंडर

चित्रः स्वेन नॉर्दक्विस्ट

कजरी गाय ने की सफाई

अनुवादः अरुंधती देवस्थले और लुईस कासेनबर्ग

A&A Book Trust

Originally published in Swedish
Mamma Mu städar
By
Jujja and Tomas Wieslander (text)
Sven Nordqvist (illustrations)

© Jujja and Tomas Wieslander (text) and Sven Nordqvist (illustrations) and
Stiftelsen Natur & Kultur, Stockholm 1997

Hindi translation © Arundhati Deosthale, 2009

All Rights Reserved
First Hindi edition: October 2009

Published by
A&A Book Trust
C1-324, Palam Vihar
Gurgaon 122 017, India
aabooktrust@gmail.com

Printed at Vimal Offset, Delhi

ISBN: 978-93-80141-05-3

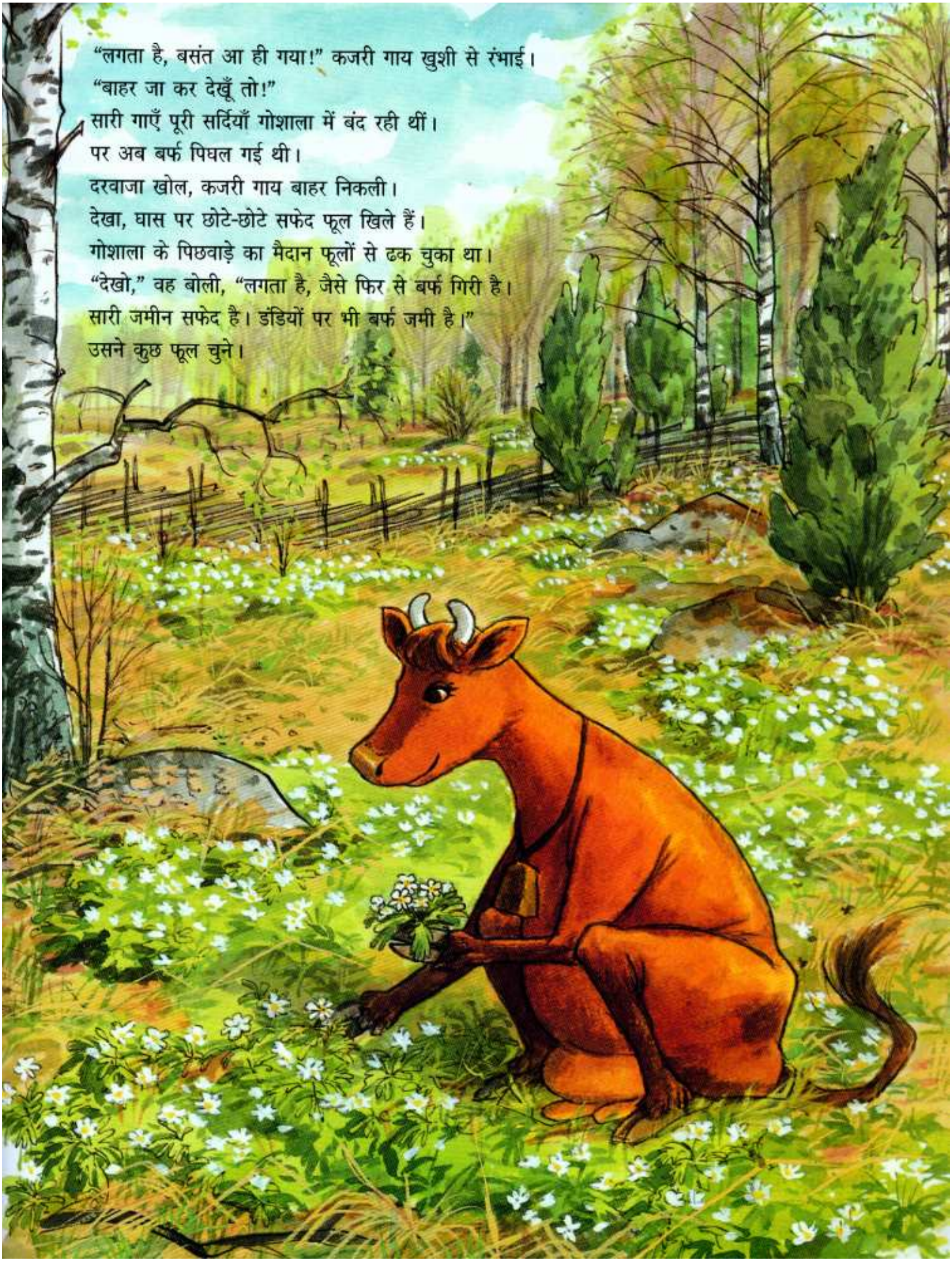

"लगता है, बसंत आ ही गया!" कजरी गाय खुशी से रंभाई।
"बाहर जा कर देखूँ तो!"
सारी गाएँ पूरी सर्दियाँ गोशाला में बंद रही थीं।
पर अब बर्फ पिघल गई थी।
दरवाजा खोल, कजरी गाय बाहर निकली।
देखा, घास पर छोटे-छोटे सफेद फूल खिले हैं।
गोशाला के पिछवाड़े का मैदान फूलों से ढक चुका था।
"देखो," वह बोली, "लगता है, जैसे फिर से बर्फ गिरी है।
सारी जमीन सफेद है। डंडियों पर भी बर्फ जमी है।"
उसने कुछ फूल चुने।

वह गोशाला लौट आई। अंदर कमरे में एक दूध का गिलास था,
उसने उसमें फूल लगा दिए।
फट् फट् फट्। कौआ आ गया।
"कौए, आ गया तू?" कजरी गाय ने कहा।
"मेरे पंख सुन्न होते जा रहे हैं!" कौआ भुनभुनाया।
"फूलों को पानी में रखो! इन्हें पानी में रखना होता है, *दूध* में नहीं।"
"उफ, कौए," कजरी गाय ने समझाया, "इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।"
"फर्क नहीं पड़ता?" कौए ने कहा, "जी हाँ, फर्क पड़ता है!"

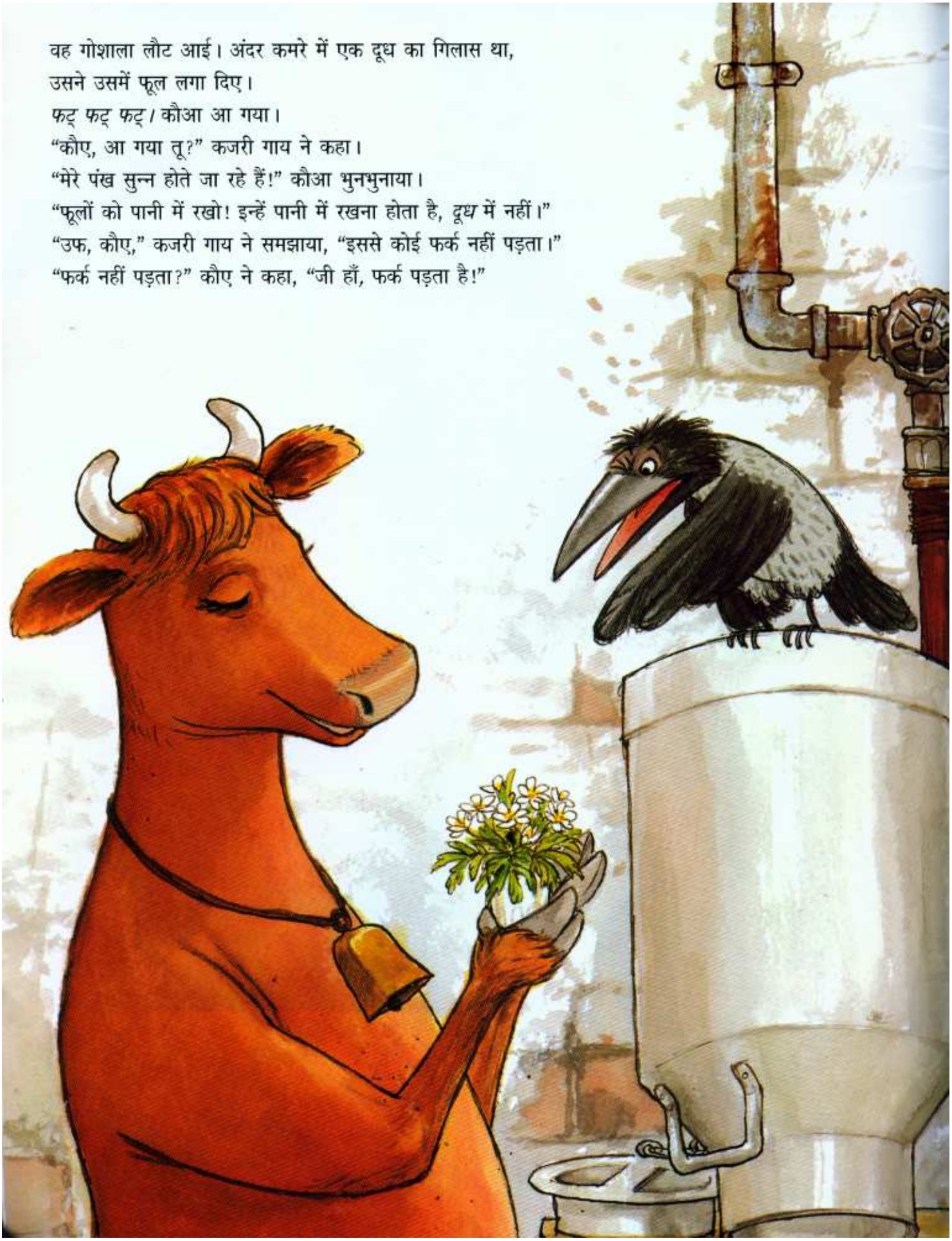

कजरी गाय खिड़की के पास गई।
"देख, कौए," उसने कहा। "इस पर सर्दियों की धूल चढ़ी है।"
उसने अपनी पूँछ से थोड़ी सी धूल हटा दी।
"देख, बसंत नजर आ रहा है!" कहकर उसने अपनी पूँछ के फटकारे
इधर-उधर मारे और फूलों वाला गिलास खिड़की में रख दिया।
"चलो," उसने कहा, "सब हो गया।"
"हो गया?" कौए ने पूछा और चारों तरफ नजर दौड़ाई।
"क्या हो गया?"
"बसंत की साफ-सफाई!"
"लेकिन, काँ काँ! बाकी का क्या होगा?"
कौआ चिल्लाया और उड़कर
गोशाला के कोने में जा बैठा।

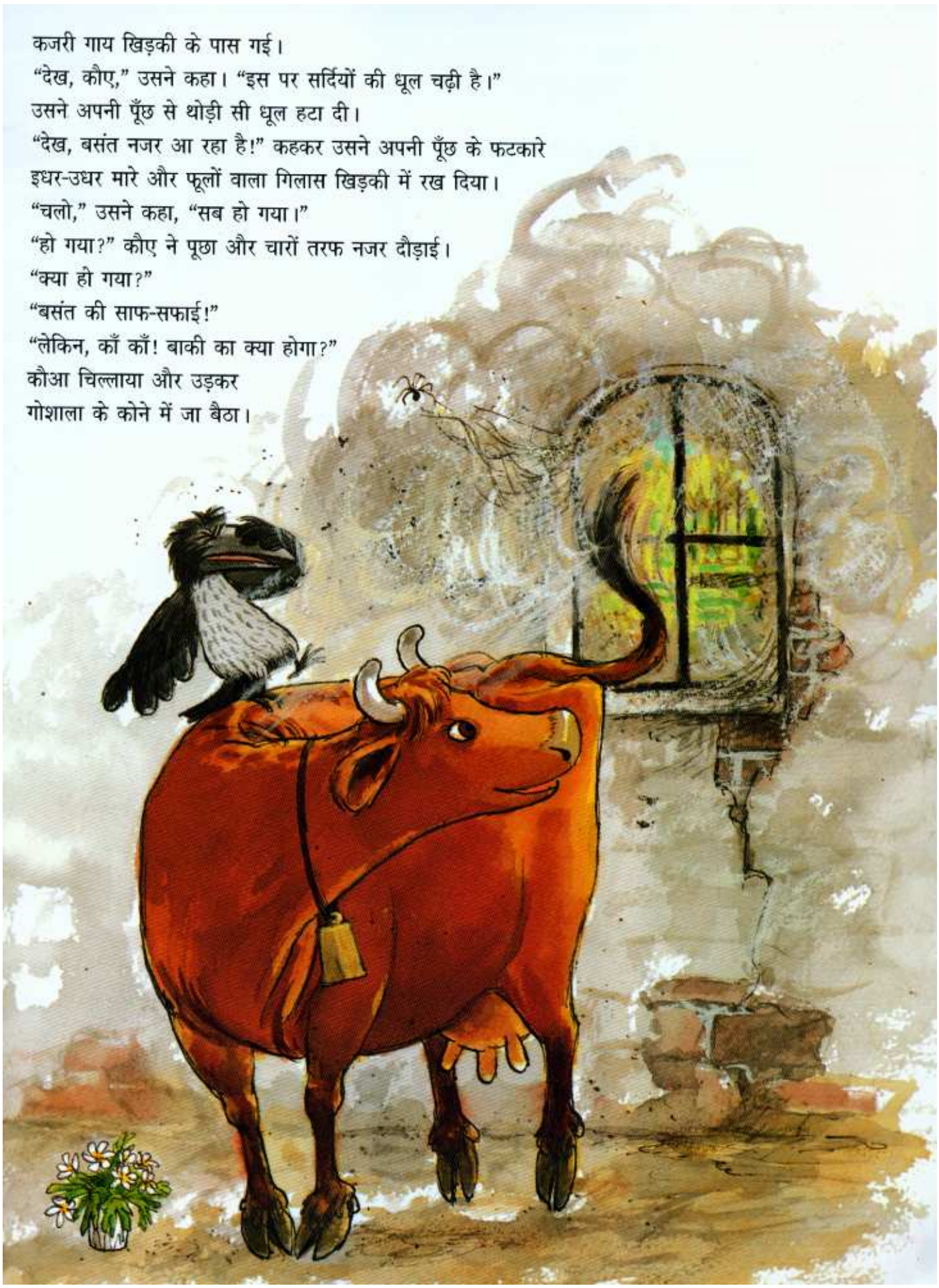

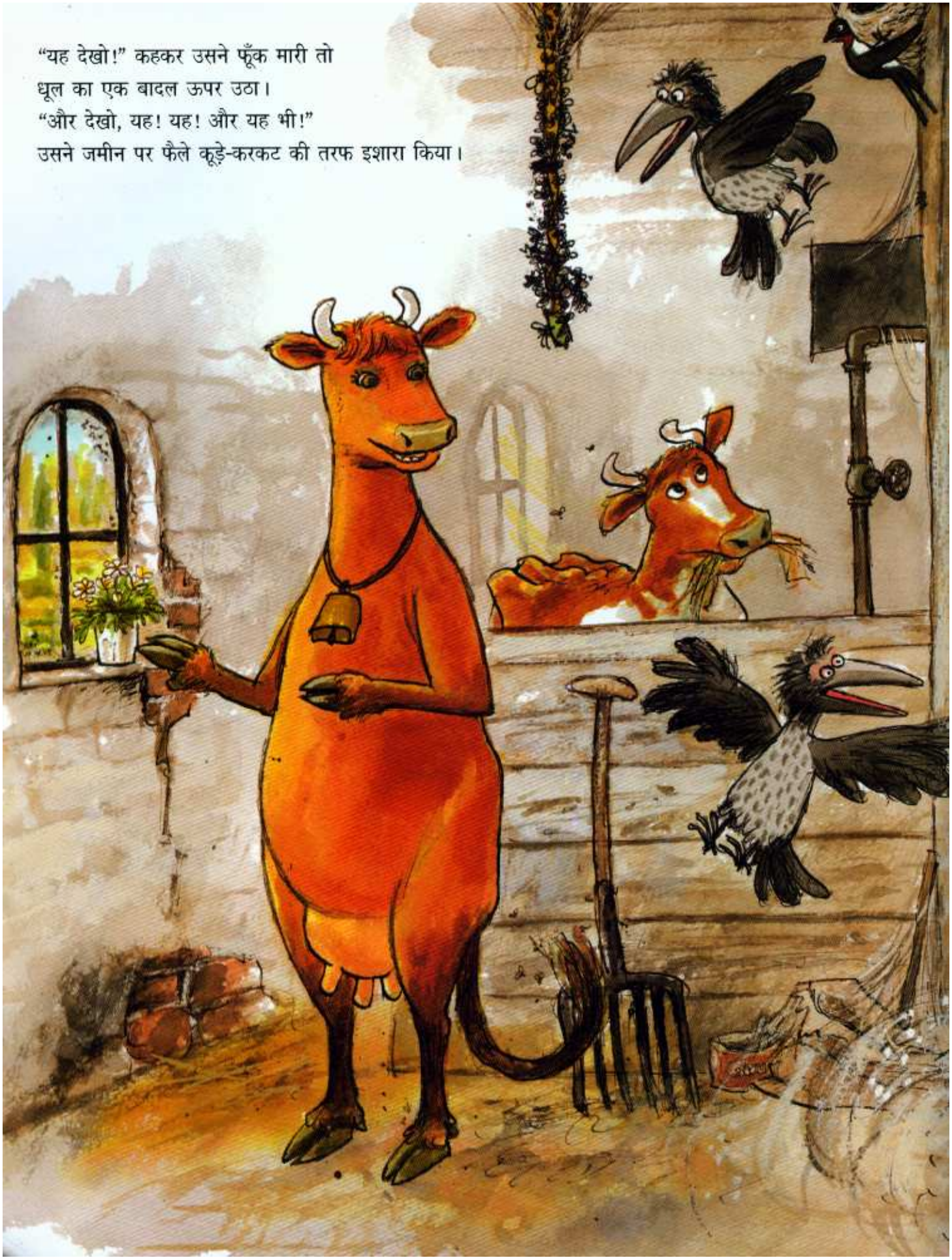

“यह देखो!” कहकर उसने फूँक मारी तो
धूल का एक बादल ऊपर उठा।
“और देखो, यह! यह! और यह भी!”
उसने जमीन पर फैले कूड़े-करकट की तरफ इशारा किया।

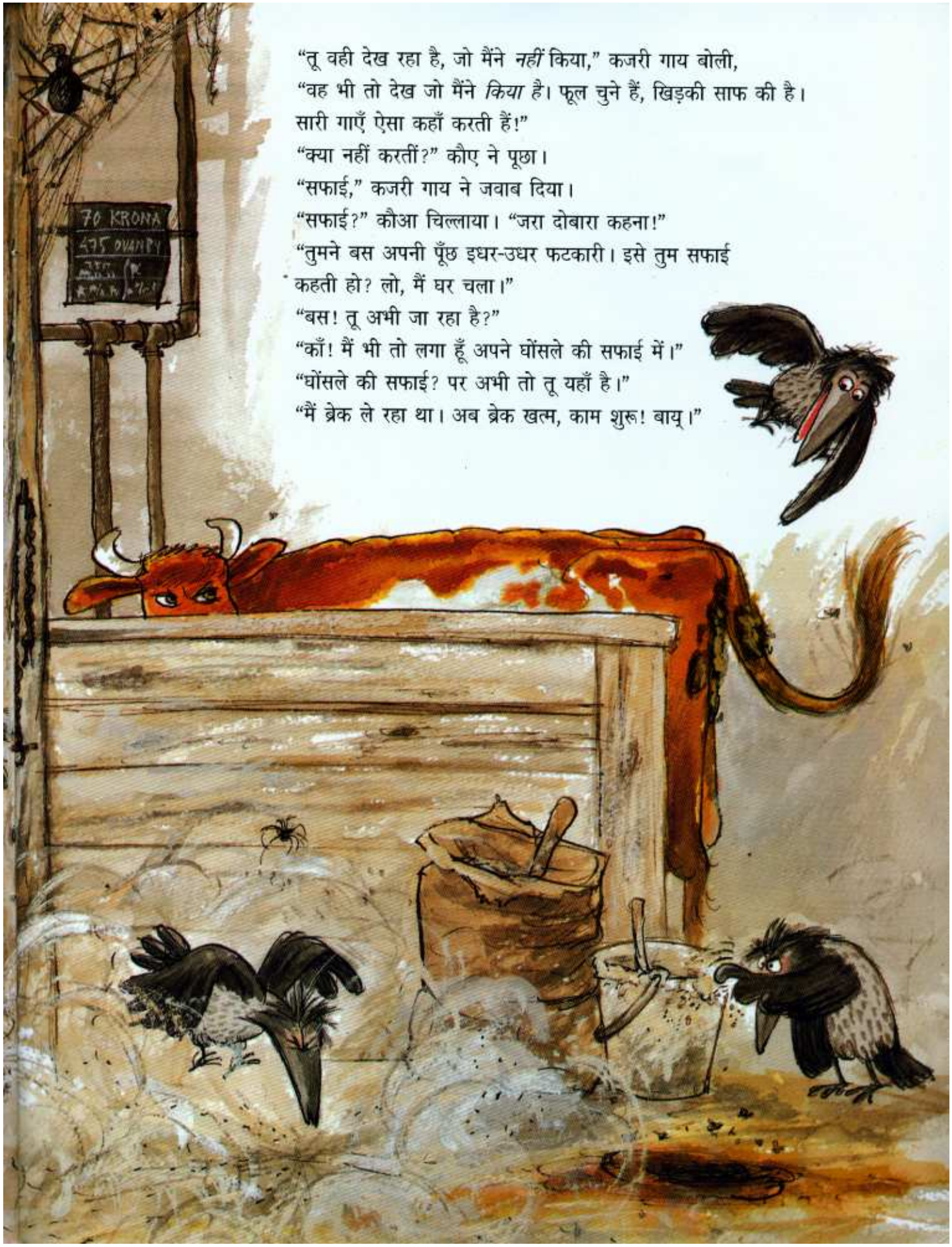

"तू वही देख रहा है, जो मैंने *नहीं* किया," कजरी गाय बोली,
"वह भी तो देख जो मैंने *किया है*। फूल चुने हैं, खिड़की साफ की है।
सारी गाएँ ऐसा कहाँ करती हैं!"
"क्या नहीं करतीं?" कौए ने पूछा।
"सफाई," कजरी गाय ने जवाब दिया।
"सफाई?" कौआ चिल्लाया। "जरा दोबारा कहना!"
"तुमने बस अपनी पूँछ इधर-उधर फटकारी। इसे तुम सफाई
कहती हो? लो, मैं घर चला।"
"बस! तू अभी जा रहा है?"
"काँ! मैं भी तो लगा हूँ अपने घोंसले की सफाई में।"
"घोंसले की सफाई? पर अभी तो तू यहाँ है।"
"मैं ब्रेक ले रहा था। अब ब्रेक खत्म, काम शुरू! बाय्।"

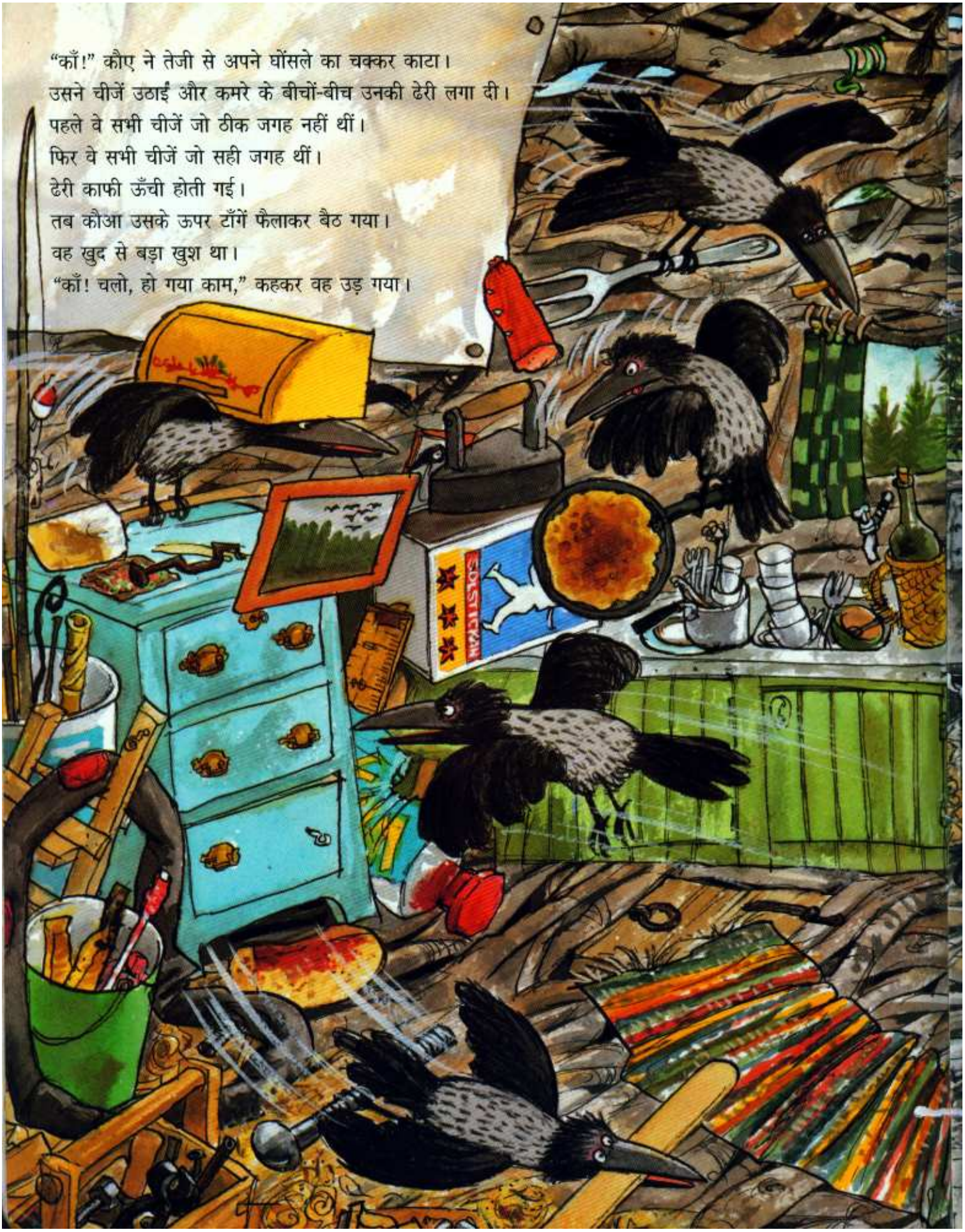

"काँ!" कौए ने तेजी से अपने घोंसले का चक्कर काटा।
उसने चीजें उठाईं और कमरे के बीचों-बीच उनकी ढेरी लगा दी।
पहले वे सभी चीजें जो ठीक जगह नहीं थीं।
फिर वे सभी चीजें जो सही जगह थीं।
ढेरी काफी ऊँची होती गई।
तब कौआ उसके ऊपर टाँगें फैलाकर बैठ गया।
वह खुद से बड़ा खुश था।
"काँ! चलो, हो गया काम," कहकर वह उड़ गया।

ALBYL

फट् फट् फट्! कौआ गोशाला में टपक पड़ा। उसे देखकर कजरी गाय मुस्काई।
"अरे, तू यहाँ क्या कर रहा है? क्या हुआ तेरे घोंसले की सफाई का?"
"काँ!" उसने कहा, "मैंने सब खत्म कर दी। कब की।"
"पर," कजरी गाय रंभाई, "कब की? तू सफाई करता कैसे है?"
"मैंने अपनी सारी चीजें कमरे के बीच ढेरी बनाकर रख दीं।
अब मैं जानता हूँ कौन सी चीज कहाँ है।"
"पर तेरे पास तो कितनी सारी चीजें हैं," कजरी गाय बोली।
"बहुत बड़ी ढेरी लग गई होगी न?"
"हाँ, वह तो है। ऊँची, उससे ऊँची और उससे भी ऊँची!"
"अच्छा," कजरी गाय ने कहा, "*इतनी* ऊँची? अगर तुझे नीचे रखी
किसी चीज की जरूरत हो तो उसे कैसे खोजेगा?"
"मैंने हर चीज ऊपर ही रखी है।"

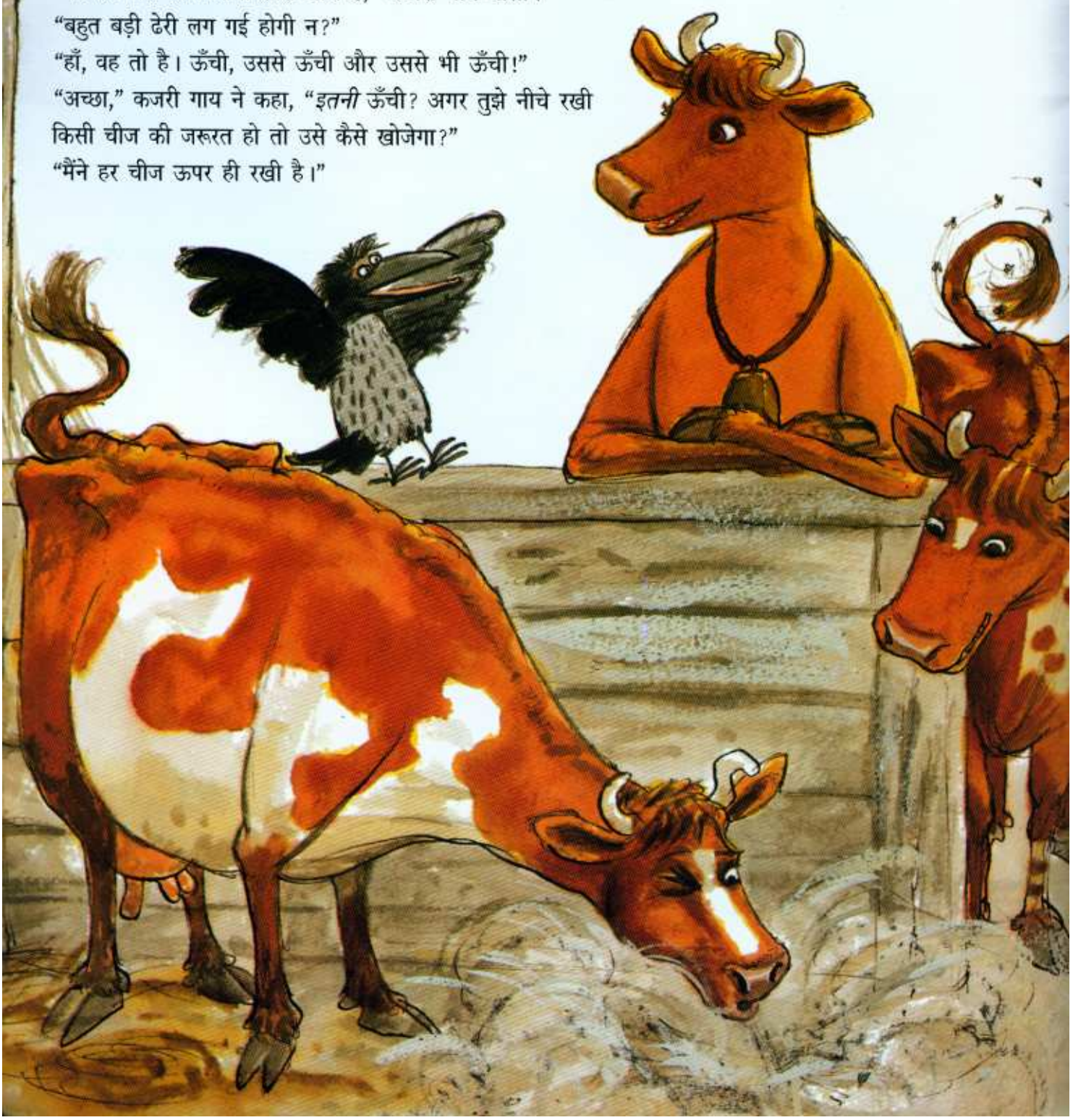

कौए ने सीना तानकर इधर उधर देखा।
वह खुद से काफी खुश नजर आ रहा था।
"मुझे सफाई अच्छी लगती है," उसने कहा। "मैं बढ़िया सफाई कर लेता हूँ!
कोई भी जगह मैं पाँच मिनट में साफ कर सकता हूँ।"
"अच्छा?" कजरी गाय ने कहा। "पर इस गोशाला का क्या करें?
यह तो पाँच मिनट में साफ नहीं हो पाएगी!"
"काँ!" कौआ बोला, "यह गोशाला? यह तो मैं पाँच *सेकंड* में साफ कर दूँगा।"
"सच?" कजरी गाय ने पूछा, "कैसे?"
"पाँच सेकंड में तुम्हें गोशाला में कूड़ा-करकट का निशान भी नहीं दिखेगा। हो तैयार?"
"ठीक है," कजरी गाय रंभाई, "कर दो साफ।"
कौआ चिल्लायाः
"एक! दो! तीन! चार और... *पाँच!*"
खटाक्!

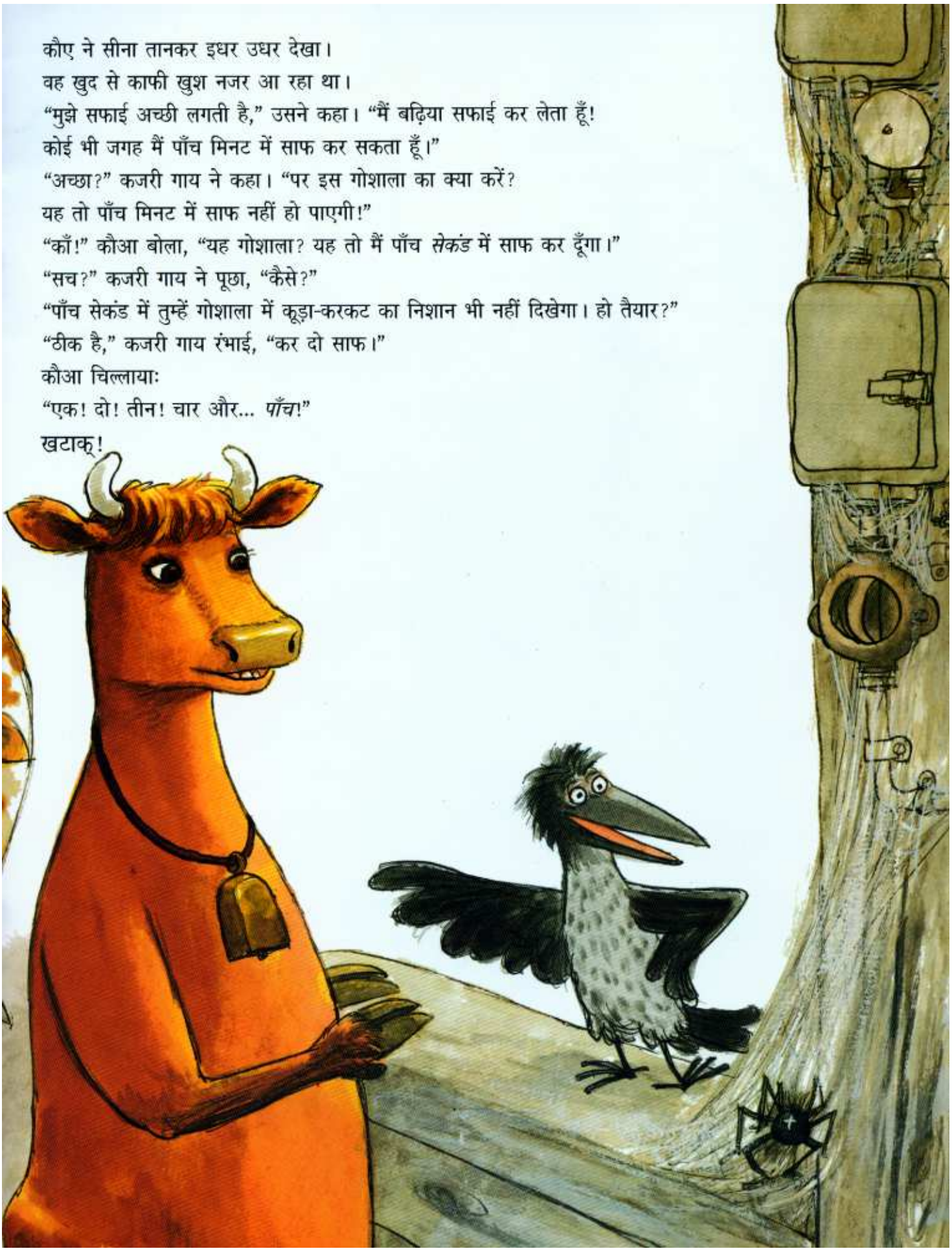

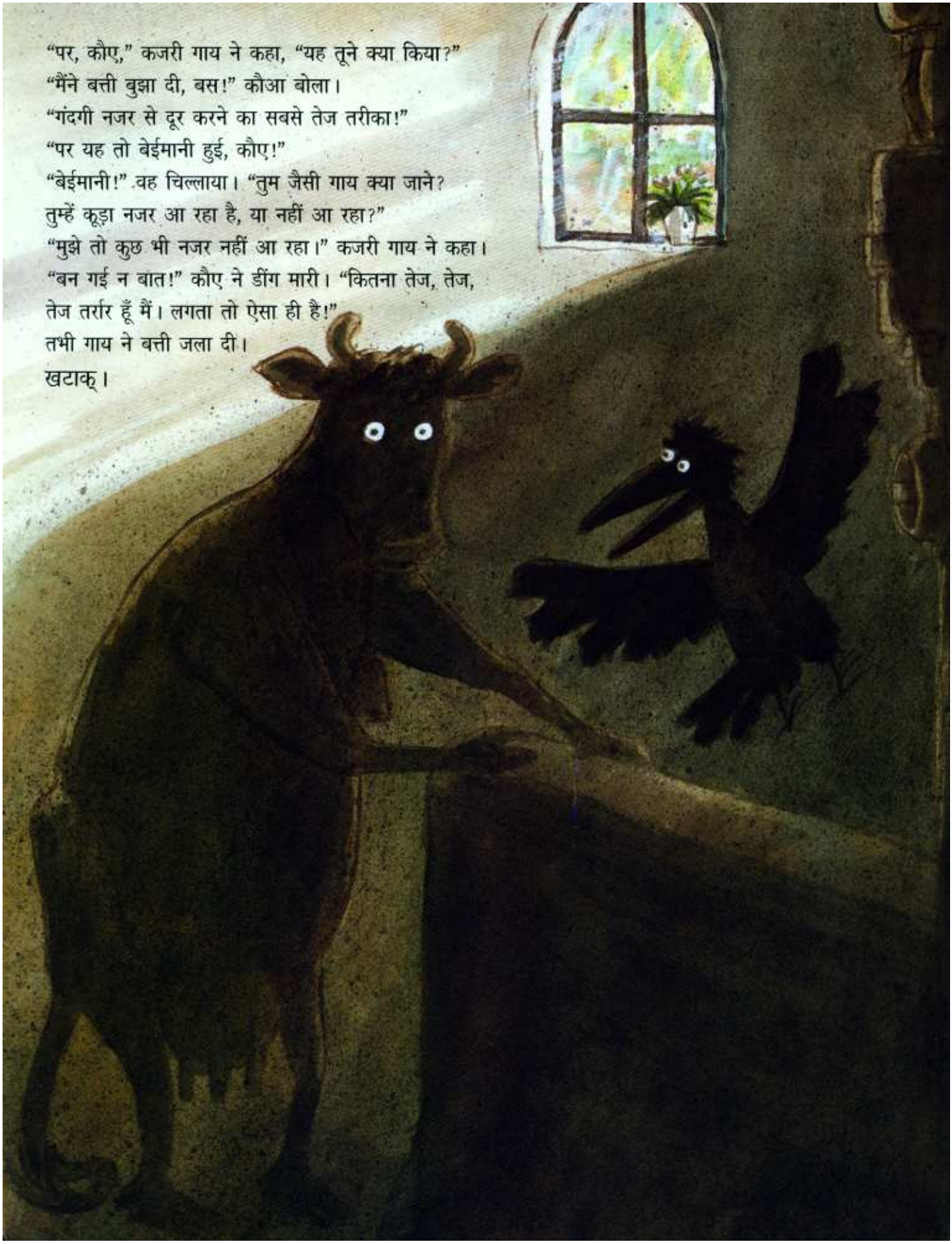

"पर, कौए," कजरी गाय ने कहा, "यह तूने क्या किया?"
"मैंने बत्ती बुझा दी, बस!" कौआ बोला।
"गंदगी नजर से दूर करने का सबसे तेज तरीका!"
"पर यह तो बेईमानी हुई, कौए!"
"बेईमानी!" वह चिल्लाया। "तुम जैसी गाय क्या जाने?
तुम्हें कूड़ा नजर आ रहा है, या नहीं आ रहा?"
"मुझे तो कुछ भी नजर नहीं आ रहा।" कजरी गाय ने कहा।
"बन गई न बात!" कौए ने डींग मारी। "कितना तेज, तेज,
तेज तर्रार हूँ मैं। लगता तो ऐसा ही है!"
तभी गाय ने बत्ती जला दी।
खटाक्।

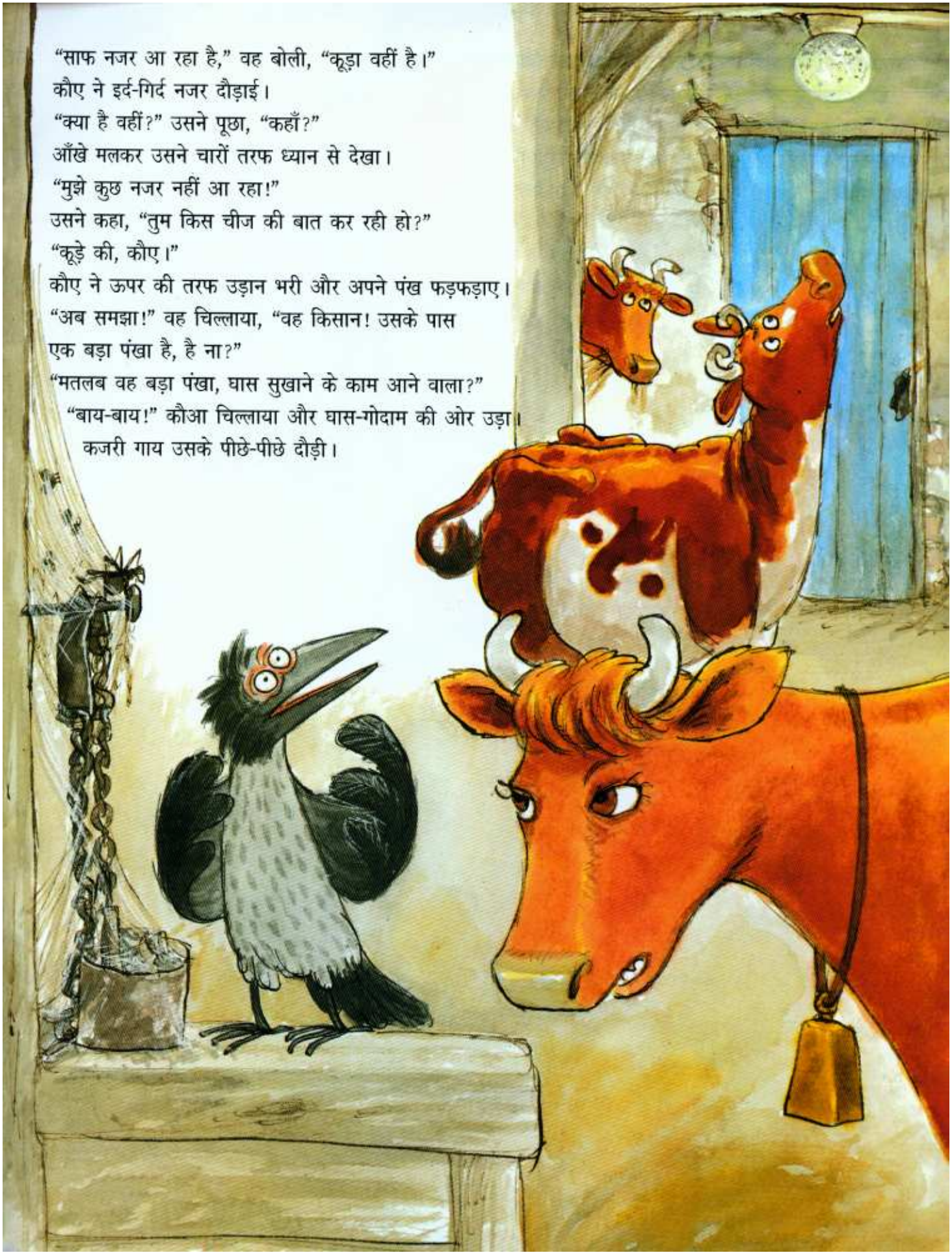

"साफ नजर आ रहा है," वह बोली, "कूड़ा वहीं है।"
कौए ने इर्द-गिर्द नजर दौड़ाई।
"क्या है वहीं?" उसने पूछा, "कहाँ?"
आँखे मलकर उसने चारों तरफ ध्यान से देखा।
"मुझे कुछ नजर नहीं आ रहा!"
उसने कहा, "तुम किस चीज की बात कर रही हो?"
"कूड़े की, कौए।"
कौए ने ऊपर की तरफ उड़ान भरी और अपने पंख फड़फड़ाए।
"अब समझा!" वह चिल्लाया, "वह किसान! उसके पास
एक बड़ा पंखा है, है ना?"
"मतलब वह बड़ा पंखा, घास सुखाने के काम आने वाला?"
"बाय-बाय!" कौआ चिल्लाया और घास-गोदाम की ओर उड़ा।
कजरी गाय उसके पीछे-पीछे दौड़ी।

जोर लगा के हैश्शा! कौए ने पूरी ताकत से उस पंखे को धकेला।
उसने उसे दरवाजे की ओर मोड़ा।
"अब क्या करेगा?" कजरी गाय ने पूछा।
"चुप रहो," कौआ बोला, "मैं काम कर रहा हूँ।"
खट्! उसने पंखे का बटन दबाया।
भर्रर्र! इंजन शुरू हुआ।
पंखे के पर गोल-गोल घूमने लगे। तेज, और तेज।
उस की आवाज हवाई जहाज के इंजन जैसी थी।

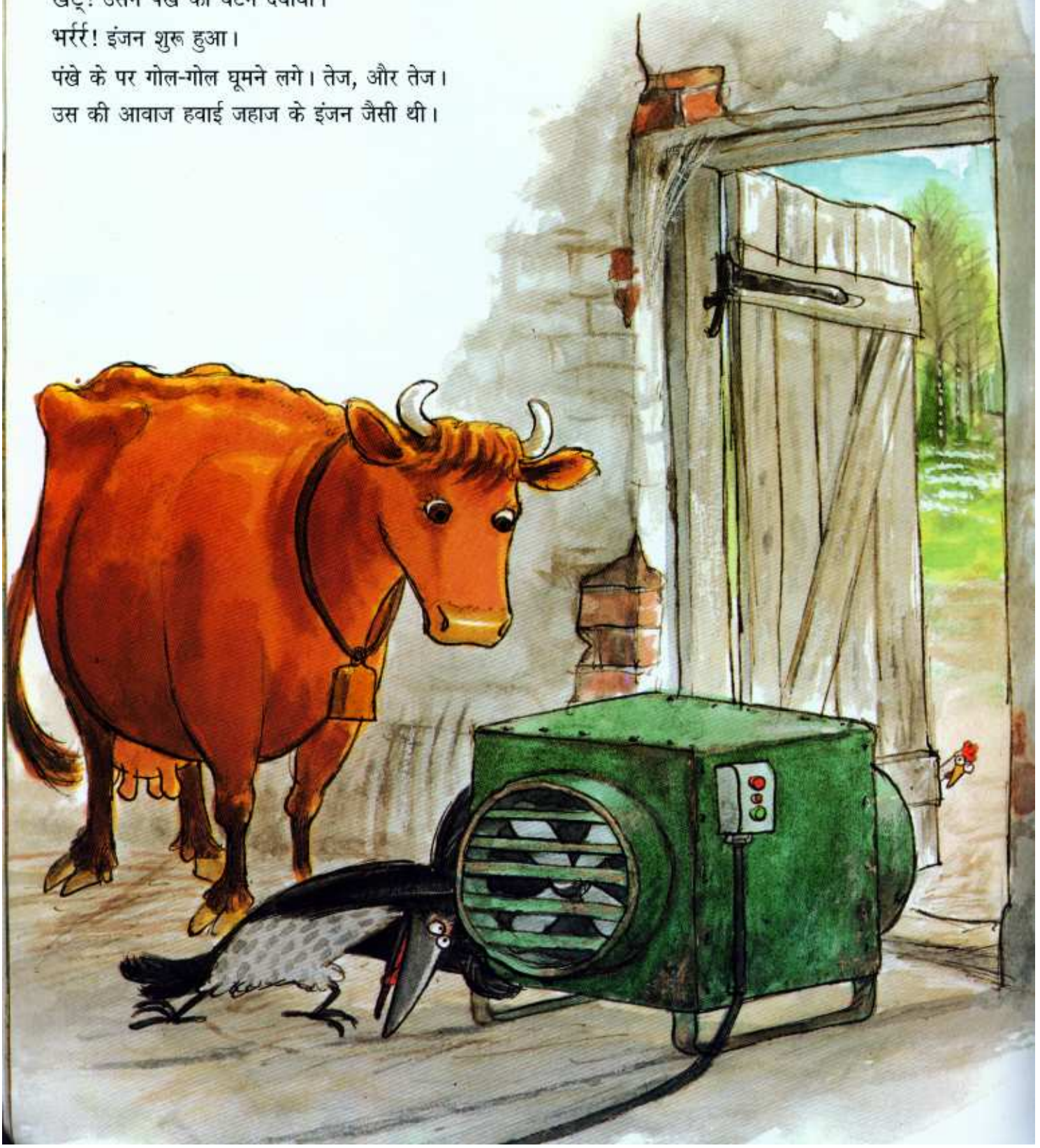

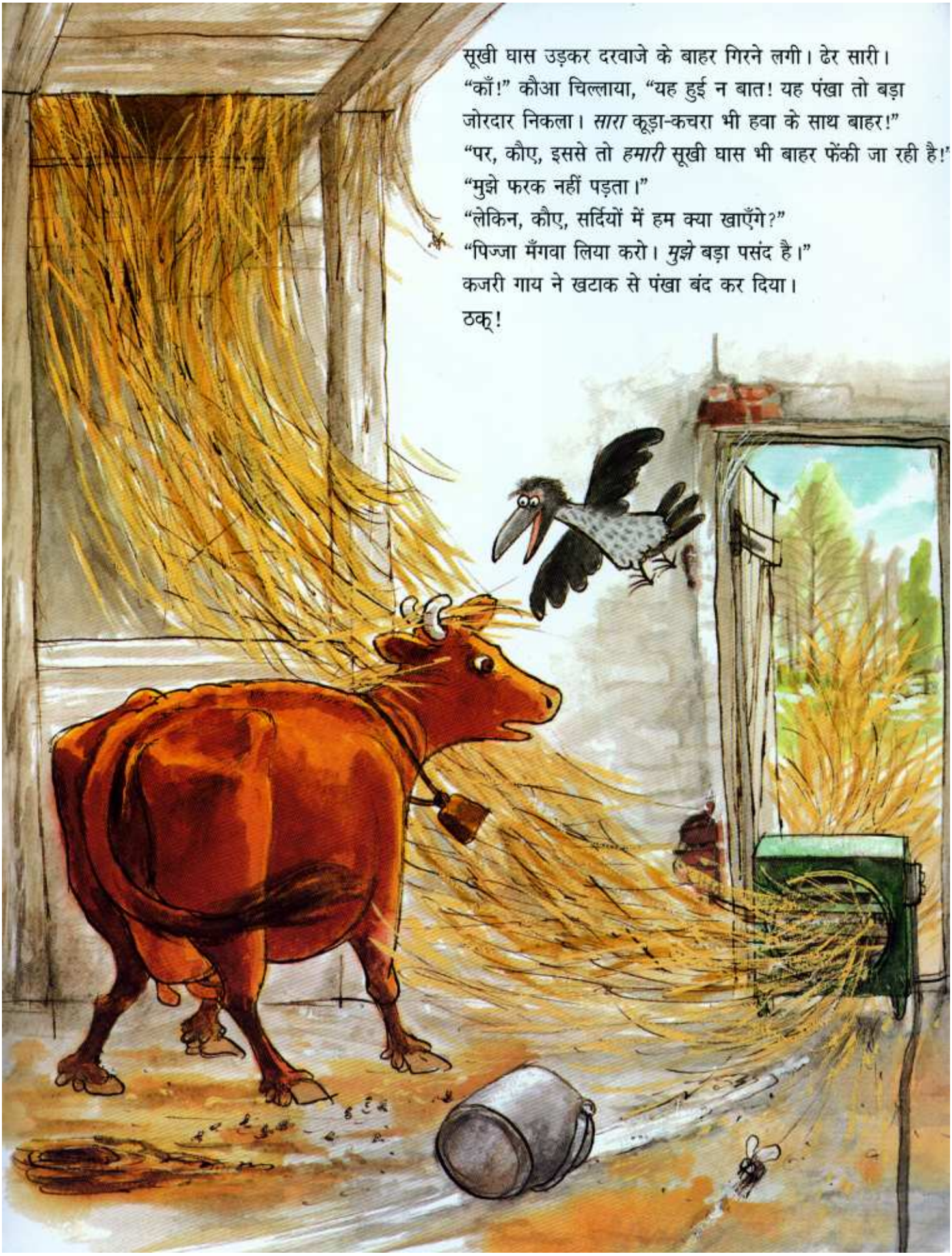

सूखी घास उड़कर दरवाजे के बाहर गिरने लगी। ढेर सारी।
"काँ!" कौआ चिल्लाया, "यह हुई न बात! यह पंखा तो बड़ा जोरदार निकला। *सारा* कूड़ा-कचरा भी हवा के साथ बाहर!"
"पर, कौए, इससे तो *हमारी* सूखी घास भी बाहर फेंकी जा रही है!"
"मुझे फरक नहीं पड़ता।"
"लेकिन, कौए, सर्दियों में हम क्या खाएँगे?"
"पिज्जा मँगवा लिया करो। *मुझे* बड़ा पसंद है।"
कजरी गाय ने खटाक से पंखा बंद कर दिया।
ठक्!

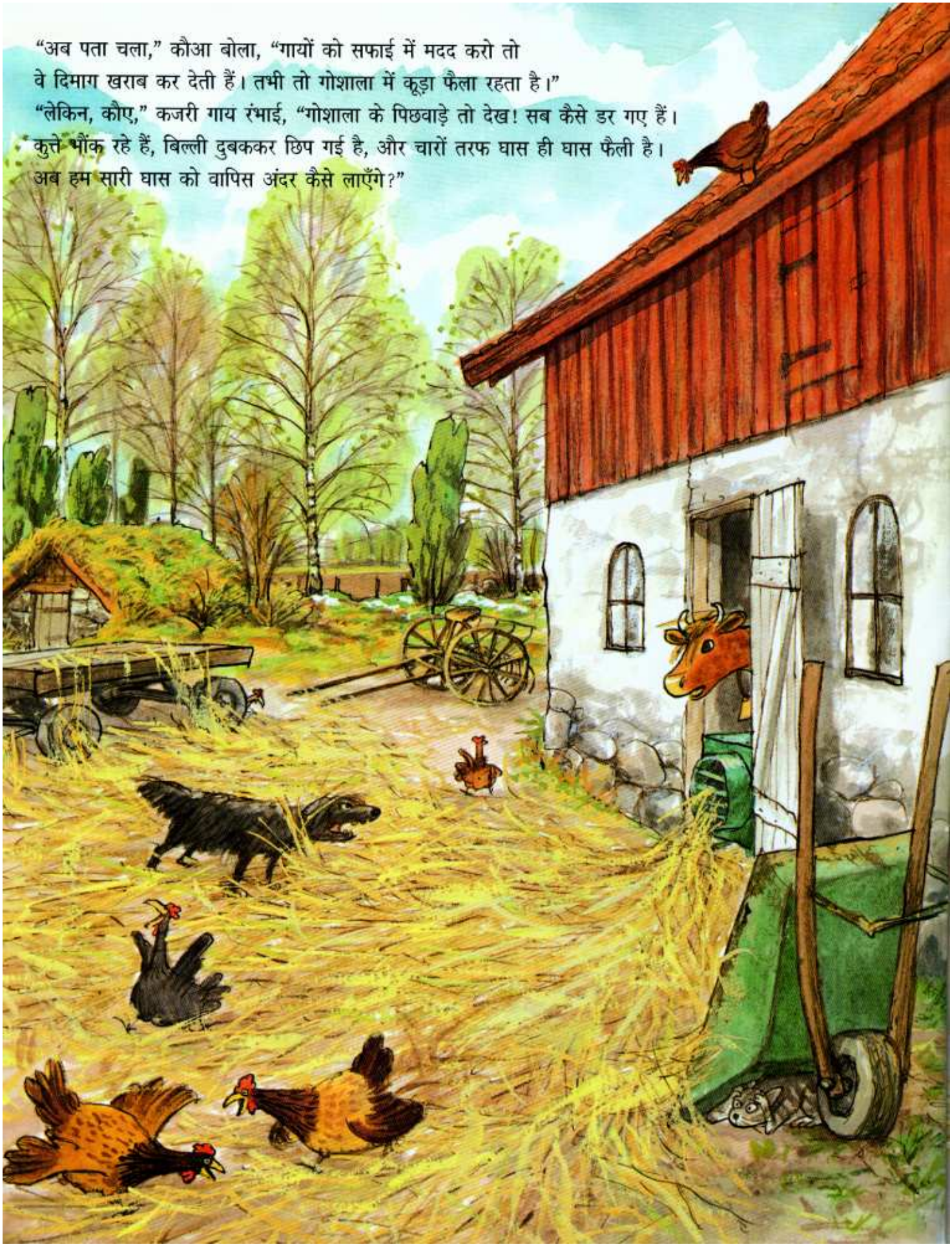

"अब पता चला," कौआ बोला, "गायों को सफाई में मदद करो तो
वे दिमाग खराब कर देती हैं। तभी तो गोशाला में कूड़ा फैला रहता है।"
"लेकिन, कौए," कजरी गाय रंभाई, "गोशाला के पिछवाड़े तो देख! सब कैसे डर गए हैं।
कुत्ते भौंक रहे हैं, बिल्ली दुबककर छिप गई है, और चारों तरफ घास ही घास फैली है।
अब हम सारी घास को वापिस अंदर कैसे लाएँगे?"

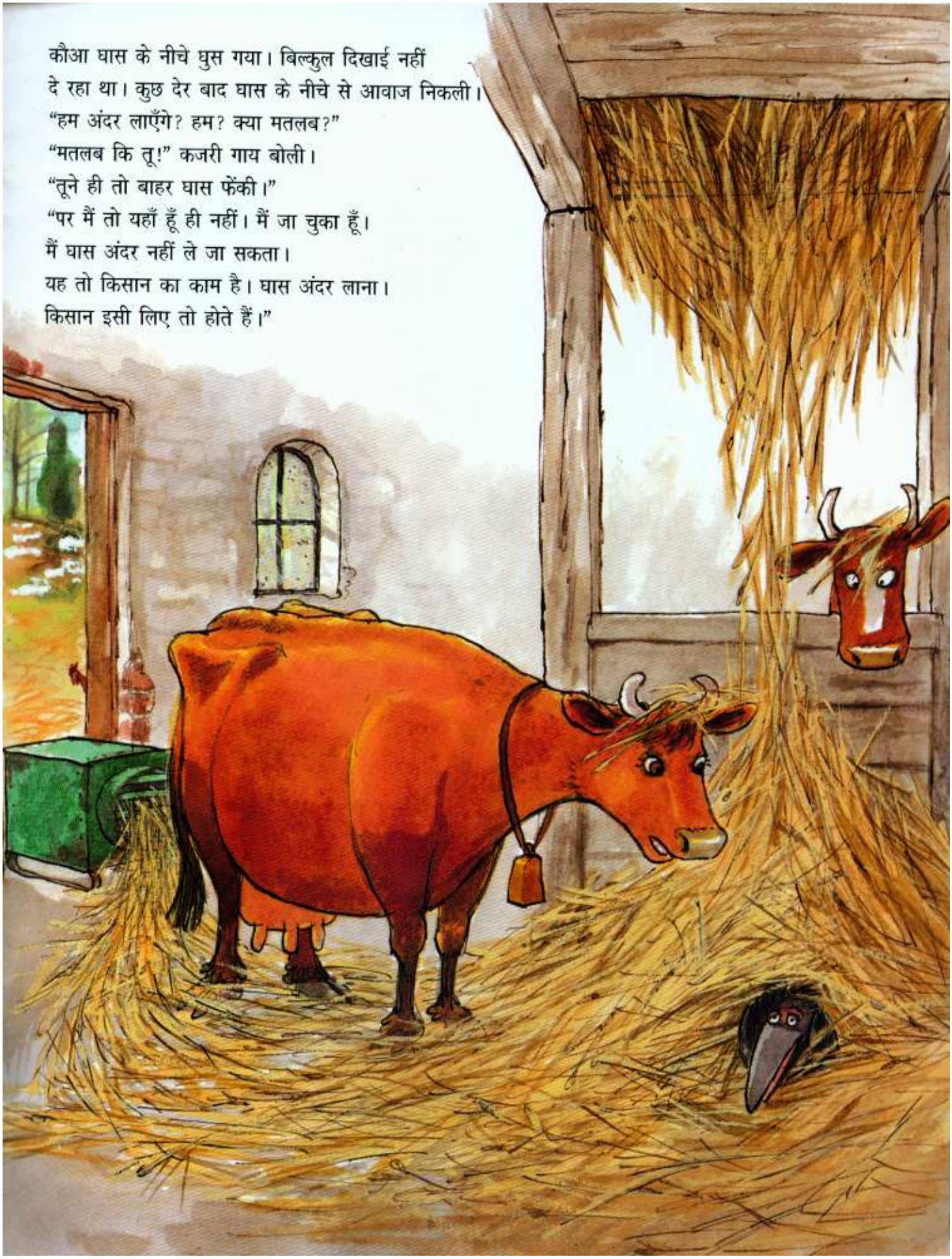

कौआ घास के नीचे घुस गया। बिल्कुल दिखाई नहीं
दे रहा था। कुछ देर बाद घास के नीचे से आवाज निकली।
"हम अंदर लाएँगे? हम? क्या मतलब?"
"मतलब कि तू!" कजरी गाय बोली।
"तूने ही तो बाहर घास फेंकी।"
"पर मैं तो यहाँ हूँ ही नहीं। मैं जा चुका हूँ।
मैं घास अंदर नहीं ले जा सकता।
यह तो किसान का काम है। घास अंदर लाना।
किसान इसी लिए तो होते हैं।"

"अब!" कौआ चिल्लाया।
वह घास से निकल हवा में रॉकेट की तरह उड़ा!
पंखों से तालियाँ बजाते उसने कहा,
"अब मैं जानता हूँ कि करना क्या है!"
वह नीचे उतरा और गोशाला से बाहर भागा।
फिर अंदर आया, खुशी से हवा में कलाबाजियाँ लगाते।

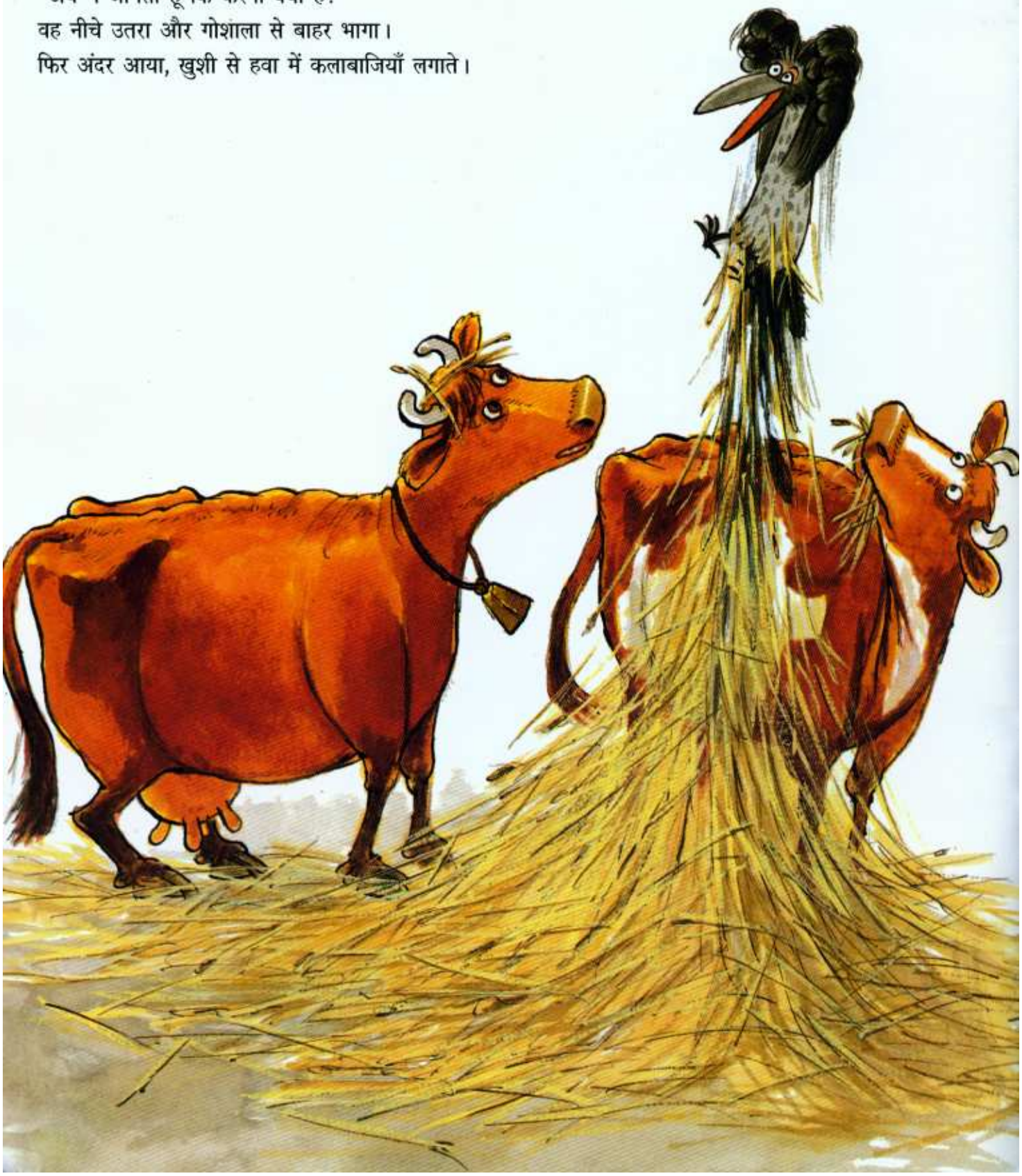

"काँ!" वह चिल्लाया। "यह मुझे पहले क्यों नहीं सूझा!
मैं तो एक किताब लिख सकता हूँ :
गोशाला कैसे साफ करें? लेखक - ***कौआ!***"
वहाँ एक खाली बालटी और सफेदी का एक बड़ा कनस्तर पड़े थे।
"यह तो वही सफेदी है जो किसान दीवारों पर पोतता है,"
यह कहते हुए कौए ने सफेदी का कनस्तर बालटी में उलट दिया।

और यह रहा सफेदी का फव्वारा!"
कौए ने सफेदी का पंप बालटी में खड़ा किया।
"काँव!" वह चिल्लाया। "कौआ *सफेदी* कर रहा है।
फर्रर्र। मैं पागलों की तरह *फव्वारा चला* रहा हूँ!"
"वह तो मैं देख ही रही हूँ," कजरी गाय बोली।
"पूरी गोशाला सफेद ही सफेद होती जा रही है..."

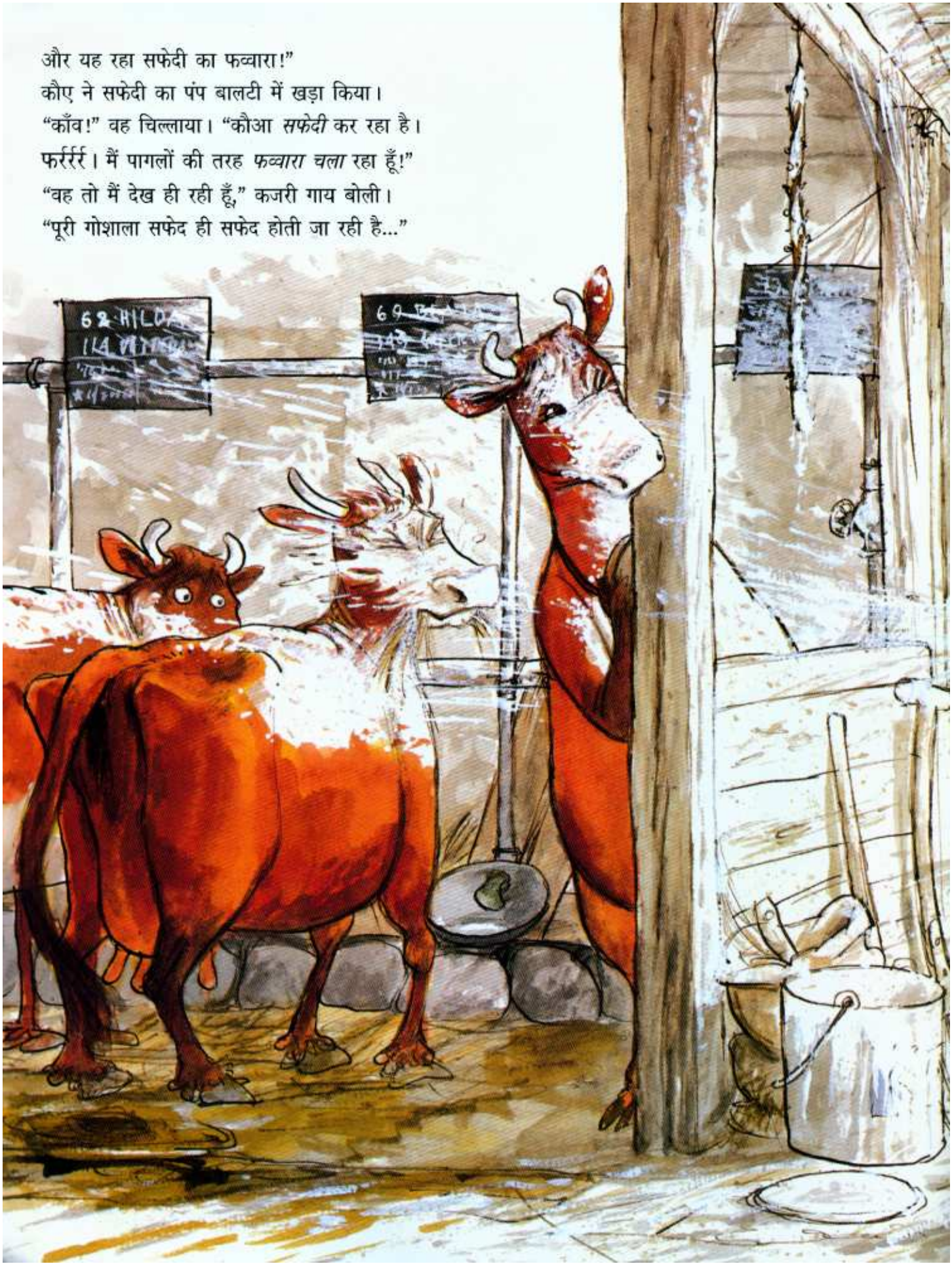

"अब देखो," कौआ चिल्लाया, "सफेद, सफेद, सफेद! हर चीज सफेद हो गई है।
देखा, पहले यह बात किसी ने सोची ही नहीं। सफेद दीवारें, सफेद फर्श, सफेद *कूड़ा-कबाड़ा*।
अब नजर नहीं आता। कचरा... *गायब*!"
"कूड़ा यहीं तो पड़ा है," कजरी गाय धीरे से बोली।
"पर सफेदी से छिप गया है," कौआ चिल्लाया। "दिखाई *कहाँ* दे रहा है? किसान यहाँ आएगा तो दंग रह जाएगा!"
"हाँ, बिल्कुल," कजरी गाय ने हामी भरी, "नीला दरवाजा पूरा सफेद हो गया है।"
"मुझे तो पहले से बेहतर लग रहा है," कौआ बोला।
"खिड़कियाँ पूरी सफेद हो गई हैं। अब बाहर नहीं देख सकते।"
"तुम गायों को हमेशा बाहर क्यों देखना होता है?" कौए ने पूछा।
"सब सफेद फूल भी पूरे सफेद हो गए हैं।"
"क्या ये ऐसे नहीं होने चाहिए?"
"पर अब गिलास सफेद है, और फूल, पत्ते, डंडियाँ भी।"
"अरे, यही तो खास बात है जंगली सफेद फूलों की!"

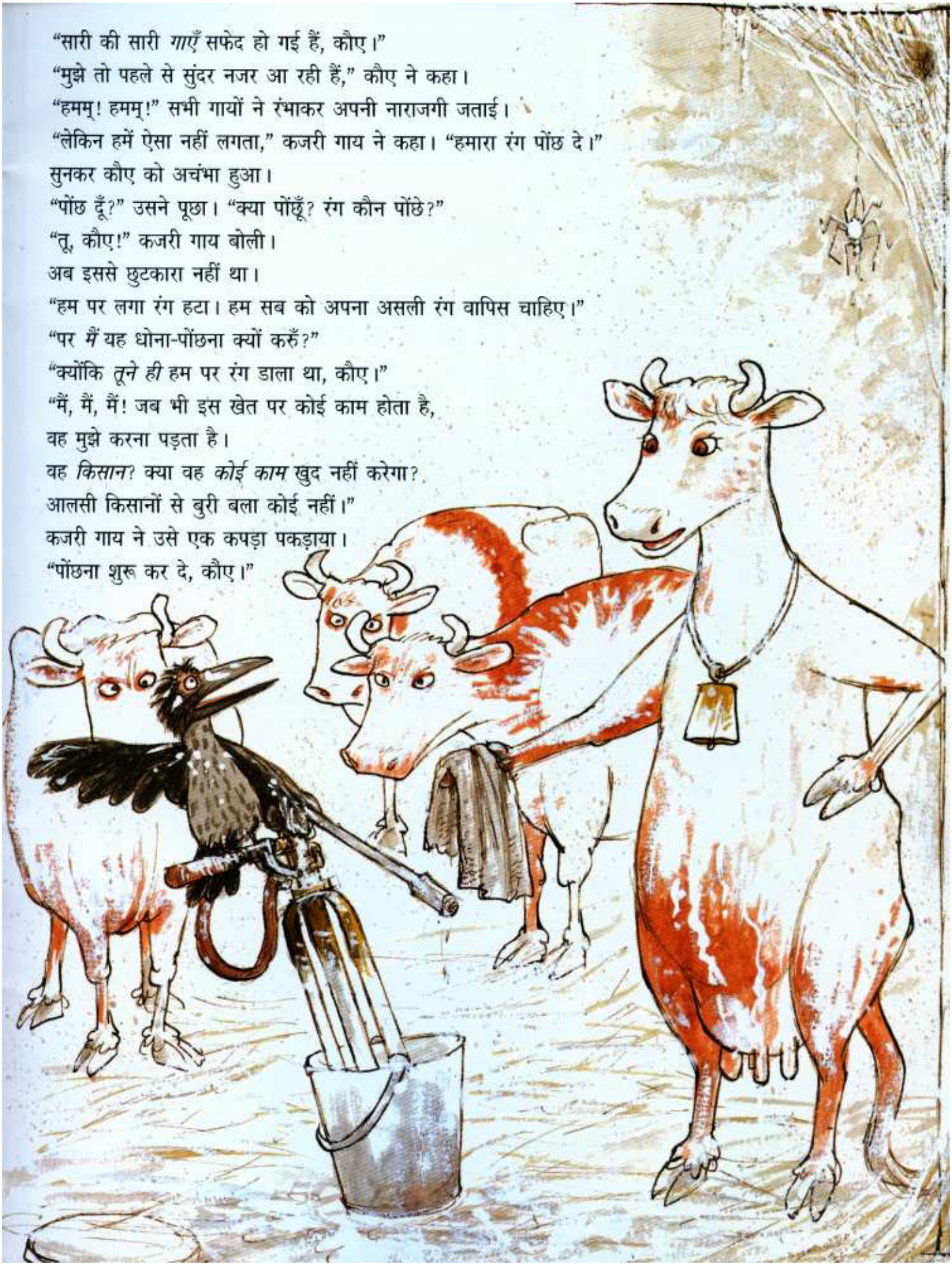

"सारी की सारी *गाएँ* सफेद हो गई हैं, कौए।"
"मुझे तो पहले से सुंदर नजर आ रही हैं," कौए ने कहा।
"हमम्! हमम्!" सभी गायों ने रंभाकर अपनी नाराजगी जताई।
"लेकिन हमें ऐसा नहीं लगता," कजरी गाय ने कहा। "हमारा रंग पोंछ दे।"
सुनकर कौए को अचंभा हुआ।
"पोंछ दूँ?" उसने पूछा। "क्या पोंछूँ? रंग कौन पोंछे?"
"तू, कौए!" कजरी गाय बोली।
अब इससे छुटकारा नहीं था।
"हम पर लगा रंग हटा। हम सब को अपना असली रंग वापिस चाहिए।"
"पर *मैं* यह धोना-पोंछना क्यों करूँ?"
"क्योंकि *तूने ही* हम पर रंग डाला था, कौए।"
"मैं, मैं, मैं! जब भी इस खेत पर कोई काम होता है,
वह मुझे करना पड़ता है।
वह *किसान*? क्या वह *कोई काम* खुद नहीं करेगा?
आलसी किसानों से बुरी बला कोई नहीं।"
कजरी गाय ने उसे एक कपड़ा पकड़ाया।
"पोंछना शुरू कर दे, कौए।"

कौए को बहुत गुस्सा चढ़ा। पर उसने पोंछना शुरू कर दिया। भुनभुनाते हुए,
उसने अपने आप से कहा, "साफ कर, कौए... संभाल, कौए... पोंछ, कौए।
कौआ, हमेशा कौआ। *कोई* किसान तो होगा *आसपास* जो थोड़ा पोंछ सकता है...
क्या दरवाजों का रंग नीला होना जरूरी है? सफेद सफेद फूलों में क्या बुराई है?
कोई तो बताए मुझे..."

"हमम्! हममा!" रंभाती गाएँ अपनी पूँछें फटकार रही थीं।
अब वे खुश थीं।
"हमें अपना पहले वाला रंग वापिस मिल गया," कजरी गाय बोली।
कौआ बहुत रूठा बैठा था। वह बुदबुदाया,
"भूरी गाय से बदसूरत कोई नहीं होता।"
"क्या बोला तू, कौए?" कजरी गाय ने पूछा।
"मैं घर जा रहा हूँ। पता नहीं, *इस* गोशाला की सफाई में मैं क्यों फँसा?" कहकर कौआ उड़ गया।
"बाय-बाय, कौए!" कजरी गाय ने कहा।
पर कौआ सुनने को था ही कहाँ। वह तो कब का जंगल में घुस चुका था।

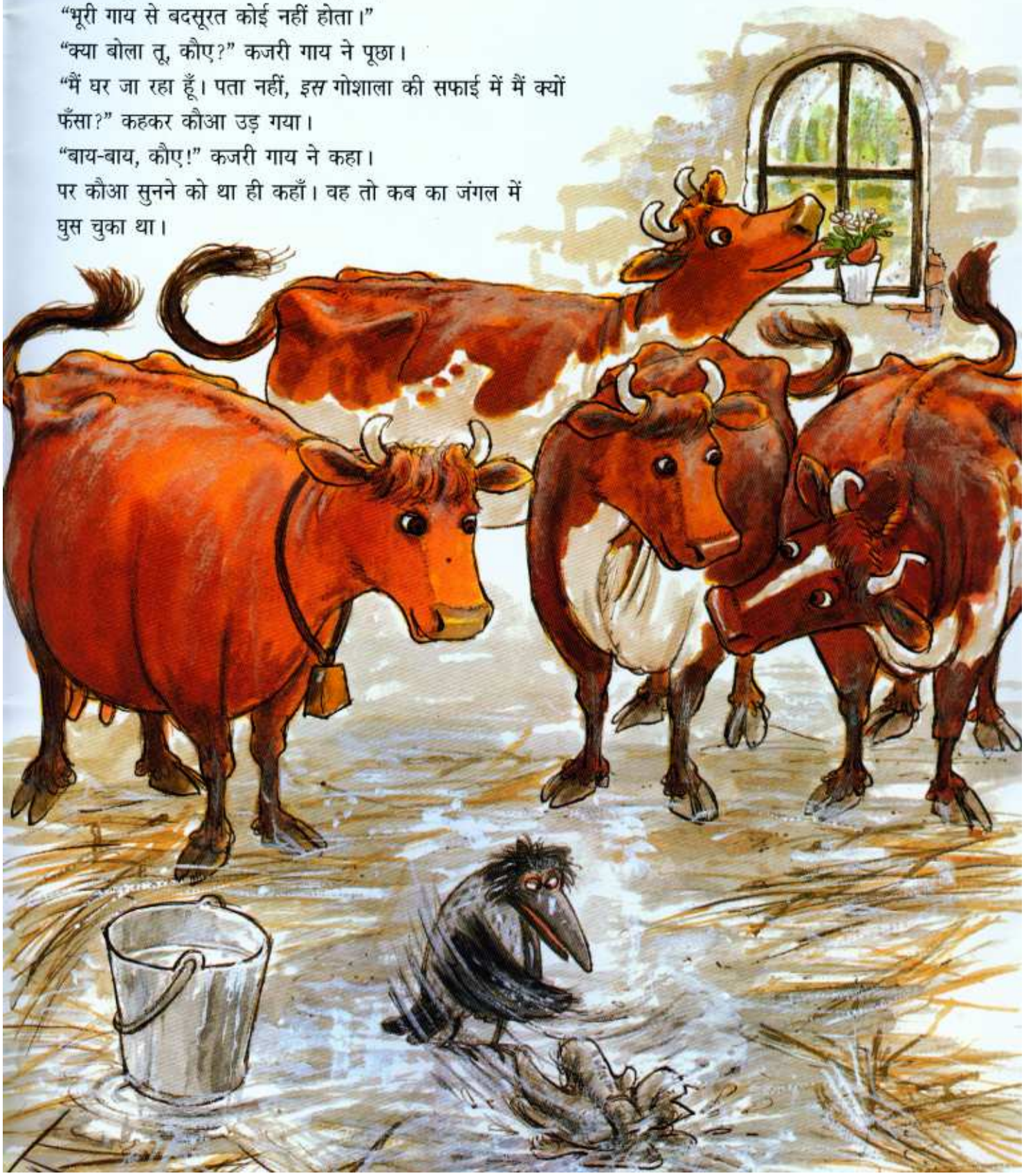

कजरी गाय को दिखाई पड़ी वह चौकी जिस पर
बैठकर किसान उसे दोहता है।
वह उसे उठाकर बाहर लाई और उस पर बैठ गई।
कुछ देर वह बसंत का मजा लेती रही, और फिर
वहीं बैठे-बैठे एक कविता लिख दी।

बसंत ऋतु के आते ही, कजरी गाय को घर की
सफाई का खयाल आया है!
कौआ भला पीछे क्यों रहने लगा? अपने तेज-तर्रार
दिमाग से वह कई करामातें ढूँढ लेता है - बिलकुल
नए ढंग से पूरी गोशाला की चुटकी बजाते ही
सफाई करने की!

कैसे? पढ़ो तो सही!

यह मजेदार कहानी हम खास आपके लिए लाए हैं,
स्वीडन से, सात समुन्दर पार से!!

50 रुपये
ISBN 978-93-80141-05-3
9 789380 141053